NEW ERA AGRICULTURE MAGAZINE

गुलदाउदी की खेती से किसानों को होगा अच्छा मुनाफा

पूर्णिमा सिंह सिकरवार

परिचय :

फूलों में गुलदाउदी का विशिष्टि एवं महत्वपूर्ण स्थान है। गुलदाउदी फारसी भाषा का शब्द है। सम्भवतः मुगल बादशाओं ने इसे मोहक और रंगारंग सौन्दर्य का निरूपण करने के लिए दिया हो। वैदिक ग्रन्थों में इसका वर्णन शतपत्री के नाम से मिलता है और ''चन्द्रमल्लिका'' के नाम से भी पुकारी जाती थी।

जलवायु : गुलदाउदी की वृद्धि और उत्पादन में जलवायु अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। गुलदाउदी की वृद्धि के लिये वायुमण्डल और सूर्य के प्रकाश का विशिष्टि एवं महत्वपूर्ण स्थान है, इसी कारण भारत के मौदानी क्षेत्रों में सर्वोत्तम फूल नवम्बर के उपरान्त ही प्राप्त होते है । ऊँचे स्थानों पर जहॉ मौसम ठण्डा रहता है और वर्षा कम होती है वहॉ गुलदाउदी को अगस्त–सितम्बर में फूल लेने के उद्देश्य से उगाया जाता है, किन्तु साधारणतया छोटे दिवस रखने वाली शरत ऋतु में इसे प्रदर्शनीय पुष्पों के लिए उगाया जाता है।

मिट्टी और उसकी तैयारी : गुलदाउदी का कृषि क्षेत्र अन्त्यन्त बड़ा है। इसे मध्य प्रदेश की काली मिट्टी में हिसमयल की स्लेटी मिट्टी में महाबलेश्वर की पश्चिमी पहाड़ियों की लौहयुक्त मिट्टी और उत्तर प्रदेश के सभी स्थानों में सफलतापूर्वक उगाया जा सकता है। दोमट मिट्टी गुलदाउदी को सफल खेती के लिए सर्वोत्तम पाई गई है।

गुलदाउदी के सफल उत्पादन के लिए भूमि की तैयारी का विशिष्ट महत्व है। अतः मिट्टी की तैयारी ऐसी की जानी चाहिए कि जिसमें जड़ों का विकास सुगमता से हो सके और पौध स्वस्थ हो सके। मिट्टी में नमी बनी रहे और पोषक तत्व रोकने की सामर्थ्य हो।

गुलदाउदी की उन्नत किस्में : सर्वसाधारण की जानकारी के लिए गुलादउदी का फूल खिलने का समयानुसार वर्गीकरण निम्नवत है –

किस्म का नाम	रोपाई का समय	फूल खिलने का समय
लाल किला, नीलिमा	सितम्बर	दिसम्बर–जनवरी
इलनी कैसकेड	सितम्बर	फरवरी–मार्च
उषा	जनवरी	अप्रैल–मई
दीप्ति, ज्वाला	फरवरी	मई–जून
रिमझिम, वर्षा	फरवरी	जून–अक्टूबर
शिव फुजी	मार्च	सितम्बर
शरद माला, शरद श्रृंगार मेगामी	जुलाई	अक्टूबर–नवम्बर
बिरबल साहनी, जयन्ती, अप्सरा	जुलाई	नवम्बर–दिसम्बर
फलर्ट, लिलिथ, ज्योत्सना, कस्तूरी, कौमुदी	अगस्त	दिसम्बर

पूर्णिमा सिंह सिकरवार
सहायक प्राध्यापक, (उद्यान विभाग)
एवकेवएसव विश्वविद्यालय, सतना (म.प्र.)

- उपयुक्त किसमें राष्ट्रीय वनस्पति संस्थान लखनउ की देन है।

नवीनतम किस्में :

अर्का गेगा, अर्का रवि और अर्का स्वर्ण (आई. आई.एच.आर., बंगलौर) शान्ति, वाई 2 के, कारगिल डायना और सद्भावना (एन.वी.आर.आई. लखनऊ) को खेती के लिए जारी किया गया।

शिघ्र ही में राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान लखनउ द्वारा गुलदाउदी की नवीन किस्में विकसित की गइ।

शान्ति : यह मूलतः फूलों वाली सजावटी किस्म है। इसका पौधो 51.2 प्रतिशत तक लम्बा फूलों का उपयोग माला, हार व गुलदस्ते बनाने के लिए किया जाता है।

सद्भावना : यह किस्म मूलतः छोटे व लाल रंग के फूलों वाली किस्म है। इसे खड़ा रहने के लिए किसी सहारे की आवश्यकता नहीं होती है। इस किस्म के फूल प्रायः दिसम्बर में खिलते हैं। इसके पौधे का स्वभाव एवं आकार छोटी खेती के लिए उपयुक्त होता है।

वाई 2 के : यह एक छोटी एवं छोटे फूलों वाली किस्म है। इसे खड़े रहने के लिए किसी सहारे की आवश्यकता नहीं पड़ती है।

कारगिल 99 : इस किस्म को विकास कारगिल युद्ध में शहीद हुए भारतीय जवानों की श्रद्धांजली के तौर पर तैयार किया गया है। यह छोटे फूलों वाली चम्मच के आकार की पीले चक्र वाली होती है। सबससे रोचक बात है कि इसकी पत्तियॉ वर्ष भर हरी रहने वाली व रंग बिरंगी होती है। इसका पौधा सधन, छोटा और अत्यधिक खिलने वाला होता है। इसके फूल खिलने का समय सितम्बर का महीना है।

खाद एवं उर्वरक : गुलदाउदी के पौधे मिट्टी से बड़ी मात्रा में पोषक तत्वों लेते हैं आहार परिवर्तन में रूचि रखते हैं तथा यही कारण है कि गुलदाउदी को खाद की अधिक मात्रा में आवश्यकता होती है।

गोबर की खाद	–	15 टन/हेक्टेयर
नाइट्रोजन	–	20–25 किलोग्राम/हेक्टेयर
फॉस्फोरस	–	100 किलोग्राम/हेक्टेयर
पोटाश	–	किलोग्राम/हेक्टेयर

गुलदाउदी के पौधे मिट्टी से बड़ी मात्रा में पोषक तत्वों को लेते हैं और आहार परिवर्तन में रूचि रखते हैं। यही कारण है कि गुलदाउदी को खाद की अधिक मात्रा में आवश्यकता होती है।

नाइट्रोजन : यह पौधों की बढ़वार में सहायक है। इससे पौधे के पत्तों, तनों की लम्बाई और फूलों के आकार में वृद्धि होती है। इसकी पूर्ति के लए जैविक और रासायनिक खादों का उपयोग किया जा सकता है।

यदि इस तथ्व की भूमि कें कमी होती है तो पौधे की लम्बाई कम और पत्तियों का रंग पीला पड़ा जाता है। दूसरी ओर यदि भूमि में इसकी मात्रा अधिक होती है तो पौधे की वानस्पतिक बढ़वार अधिक होती है जिसके कारण तना कमजोर हो जाता है, पत्तियॉ कठोर और फूल देर से आते हैं।

पोटाश : इससे पौधा स्वस्थ रहता है। पौधों में रोगों के विरूद्ध अधिक सहन शक्ति आ जाती है। इसकी कमी होने से पौधे की पत्तियों के किनारे कत्थई रंग के हो जाते हैं।

फास्फोरस : इसकी कमी से जड़ों की बढ़वार ठीक नहीं हो पाती है। फूल भी छोटे रह जाते हैं। पत्तियों के किनारे लाल रंग के हो जाते हैं।

गुलदाउदी का प्रवर्धन : गुलदाउदी का प्रवर्धन दो प्रकार से किया जाता है जिसका उल्लेख नीचे किया गया हे –

बीज द्वारा : गुलदाउदी की एकवर्षीय किस्मों को पौधशाला में बीज बोकर पौध तैयार की जाती है। तैयार पौधे को सितम्बर–अक्टूकर में क्यारियों में लगाया जाता है, जो उत्तरी भारत में जनवरी से मार्च तक फूल देते हैं। इन किस्मों के पौधे लगभग 60–675 सेमी तक ऊॅचे बढ़ते हैं।

जड़ो को लगाकर : गुलदाउदी की बहुवर्षीय किस्मों को जड़ों द्वारा उगाया जाता है। इसमें अधिकतक डबल कोरियन, टाइप जैसी बीरबल सहाहनी, किस्म ही खेत में उगाई जाती है। गुलदाउदी का सफेद व पीला फूल बाजार में अधिक पसंद किया जाता है।

बड़े आकार के फूल उगाना : बड़े आकार के फूल दो प्रकार से उगााये जा सकते हैं –

1. एक फूल का पौधा उगाना।
2. दो या तीन फूल पौधे उगाना।

इस प्रकार के पौधे के लिए बड़े फूल वाली किस्मों का ही चयन किया जाता है, जैसे प्रतिक्षिप्त, आकुंचित आदि। बड़े आकार के लिए चुनी गयी किस्मों को अधिकतर कर्तन द्वारा लगाया जाता है और जब जड़ें 2 से 3 सेमी लम्बी हो जाये तो गमलों में रोप दिया जाता है। नई जड़ें निकलने का समय किस्म और मोसम पर निर्भर करता है आमतौर पर 2–3 सेमी लम्बी जड़े 3 से 5 सप्ताह में निकल आती है। 20 सेमी व्यास वाला गमला होना चाहिए –

गोबर की खाद	–	दो भाग
पत्ती की खाद	–	दो भाग
चिकनी मिट्टी	–	एक भाग
हड़डी की खाद	–	दो भाग

पौध रोपण के उपरान्त उनकी जड़ों की ऊपर की मिट्टी की उंगलियों से भली भॉति दबा देवना चाहिए। गमलों को ऊपर से लगभग 4 सेमी खाली रखना चाहिए। रोपण के 5 दिन बाद एक सेमी मोटी बारीख खली की खाद की तकह गमले मे बिछा देनी चाहिए जिससे पानी देने पर खाद घुलकर पौधों को मिलती रहे। अगस्त महीने में तरल खाद देना शुरू कर देना चाहिए क्योंकि इतने दिनों में जड़ें भलीभॉति विकसित पोटेशियम नाइट्रेट, 10 लीटर पानी में घोलकर पौधे में दिया जाता है। यह प्रथम बार सितम्बर के शुरू में और दूसरी बार सितम्बर के मध्य में देना चाहिए। सितम्बर के अन्त में या अक्टूबर के शरू में गमले के ऊपर 2.0 से 2.5 सेमी जगह निम्नमिश्रण से भर देनी चाहिए –

गोबर की खाद	–	एक भाग
बग की मिट्टी	–	एक भाग
लकड़ी की रखा	–	एक भाग
नीम की खली	–	1/4 भाग

अक्टूबर के शुरू में पौधों पर कलियॉ आनी शुरू हो जाती हैं। ध्यान रहे इस समय पौधों को खाद देना बन्द कर देना चाहिए अन्यथा पौधे की वानस्पितिक बढ़वार होती रहेगी और फूल अच्छा नहीं बनेगा।

सिंचाई : गुलदाउदी के पौधें की सिंचाई सरल नहीं है। कोई समय और अवधि उसकी चिाई के लिए निश्चित करना कठिन है। पानी तब दें, जब पौधें को आवश्यकता हो और उतनी मात्रा में दें जितनी मात्रा में आवश्यक हो। पौधे ढालू स्थान पर लगाने हों तो प्रत्येक पौधे अथवा उनकी क्यारी का इतना गहरा थाला बॉधे कि सिंचाई और वर्षा का पानी रूक सके और सीधा न बह जाये। वृद्धि काल में उनको निःसन्देह प्रतिदिन पानी देना चाहिए भूमि के पौधों की अपेक्षा गमलों में लगे पौधे शीघ्र शुष्क होते हैं और पानी मांगते हैं। प्रत्येक रोपाई या बदलाई के उपरान्त, पानी कम से कम एक दिन उपरान्त दें जिसे कोमल जड़ें नमी मिट्टी में प्रवेश कर सकें। ग्रीष्म ऋतु में, सिंचाई सूर्यास्त होने के उपरान्त ही करें जिससे पौधे रात को भी पानी से पूरा लाभ उठा सकें।

पौध संरक्षण : गुलदाउदी की फसल को विभिन्न प्रकार के रोग व कीट उसकी सिविभन्न अवस्थाओं में क्षति पहुॅचाते हैं। प्रमुख रोग व कीटों की रोकथाम के लिए निम्नि पौध संरक्षण उपाय अपवनायें –

गेरूई फफूंदी : पौधों की चोटी पर गिरकर जो पानी रूक जाता है वह यह रोग उत्पन्न कर देता है। कलियॉ कुरूप हो जाती है। जो गमले अचानक वर्षा के कारण छाया में लाय गये हों उनका पानी झाड़कर कुछ समय के लिए बाहर रख देना चाहिए ताकि उनकी नमी पूर्ण रूप से उड जायें।

भूरी फफूंदी : यह एक प्रकार की भूरे रंग की बुकनीदार वस्तु की झिल्ली सी उत्पन्न होकर पत्तियों को ढक लेती है। यह मधुरिका रोग का एक रूप है, जो बहुत से पौधों पर लग जाता है। इस रोग का आक्रमण उन पौधों पर विशेष रूप से होता है जो पास–पास रहते हैं और जिनके मध्य वायु और प्रकाश का प्रवेश ठीक नहीं हो पाता है। यदि इस रोग क समय से रोकथाम न की जाये तो यह पत्तियों से पुष्पों की पंखुड़ियों तक पहुॅच जाता है और इस प्रकार पौधे की वृद्धि पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। पोटेशियम सल्फाइड या केराथेन के घोल के छिड़काव से यह नष्ट हो जाता है। पत्यिों पर गन्धक की धूल की बुकनी करने से भी लाभ होता है।

कीट

थ्रिप्स : ये बहुत छोटे कीट पत्तियों की निचली सतहों पर आक्रमण करते हैं और उनकी त्वचा में छिद्र करके अन्दर प्रवेश कर जाते हैं। ये जीवन रस को चूषते हैं। प्रौढ कीट बादामी रंग को हो जाता है किन्तु आकार में छोटा ही रहता है। इनकी इल्ली (लाखा) पीले रंग के और बिना पैर वाले होते हैं। दोनों ही बहुत चंचल होते हैं और छेड़ते ही कूद पड़ते हैं। रस चूषने के कारण पत्तियॉ पीली पड़ जाती है। तम्बाकू की धूनी देने अथवा साबुन के घोल का छिड़काव करने से इनसे छुटकारा मिल जाता है।

चेंपा : इसकी दो किस्में गुलदाउदी को क्षति पहुॅचाती है। एक पौधे की साधारण जुएं अथवा ग्रीन फ्लाई और दूसरा काला चेंपा पर होता है। ये शाखाओं के कोमल सिरों पर भी लग जाती हैं और बाहरी त्वचा को बॉधकर, शाखाओं के जीवन रस को चूष लेते हैं, जिससे पौधों की वृद्धि पर प्रतिकूल

प्रभाव पड़ता है। जब ये कीट पौधों की शाखाओं पर ही हो तों तम्बाकू की महीन बुकनी बुरक कर एक दो दिन का अन्तराल देकर जल से छिड़काव कर दें अथवा खुले मौसम में, सायंकाल को साबुन, बासुडीन या फालीडॉल का घोल भी छिड़क सकते हैं, परन्तु ठण्डे मौसम में इस घोल का छिड़काव कदापि न करें।

हरी मक्खी : कलियॉ आने के समय, पौधों के शीर्षों पर पत्तियों के मध्य इनका जमाव हो जाता है। इसी समय अन्य रस चूषने वाले कीट भी आक्रमण करते हैं। इनकी रोकथाम के लिए मोनोक्रोटोफास 2 मिली एक लीटर पानी के घोल का छिड़काव करें, क्योंकि इन सिरों पर इनका जमाव होता है। इसकी रोकथाम के लिए तबाकु के पानी का घोल भी छिड़का जा सकता है।

तम्बाकू का पानी बनाने की विधि : 2 किग्रा कुंटा हुआ तम्बाकू, एक बाल्टी पानी मे रात भर भिगोकर रखें। अगले दिन 30 ग्राम फिटकरी पीसकर उसमें डाल दें। धूप के समय इस घोल में गमले उलटकर पौधों के सिरों को डुबोडुबोकर निकाल लें और एक घण्टे तक गलमों को लिटाकर रखें जिससे अधिक घोल टपककर नीचे निकल जाएं। यदि पौधे क्यारियों में हो तो उस स्थिति में घोल का छानकर छिड़काव करें।

व्हाइट बीटिल मैगट : ये जड़ों में लग जाते हैं और उनको खाकर समाप्त कर देते हैं। यदि भली प्रकार रोपित पौधे मुरझाये हुए दिखाई दे तो इन्ही के कारण समझें। ऐसी दशा में गमले से पौधों के पिण्ड निकालकर और उनकी पुरानी दूषित मिट्टी झाड़कर नवीन कीटाणु रहित शुद्ध मिट्टी में लगा दें।